B.Com. (H)
Pg. A/c & Finance (H)
Paper - VI
Cost & Management Accounting.
Date- 18.07.2020

प्रो० सर्वजीत कुमार
सहायक प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय राजनगर
(मधुबनी)

UNIT - II
TOPIC - SPECIMEN OF A COST SHEET:

COST SHEET कई प्रकार के होते हैं, जैसे साधारण लागत पत्रक, तुलनात्मक अवधि का लागत पत्रक, दो या अधिक उत्पादों का तुलनात्मक लागत पत्रक एवं अनुमानित लागत पत्रक आदि। किसी वस्तु के उत्पादन से संबंधित सम्पूर्ण लागतों को निम्नलिखित COST SHEET के प्रारूप में दर्शाया जाता है :—

COST SHEET FOR THE MONTH ENDING

OUTPUT- .... UNIT

PARTICULARS		TOTAL ₹.	COST PER UNIT ₹.
Opening stock of Raw Materials	x	x	
ADD:- Purchases of Raw Materials	x	x	
ADD:- Carriage Inwards.	x	x	
		✓	
Less:- Closing stock of Raw Materials		x	
Materials Consumed		✓	
Direct Wages		x	
Direct Expenses		x	
(A) PRIME COST		✓	
Works or Factory oncost			
Indirect Wages			

Scanned with CamScanner

PARTICULARS	TOTAL ₹.	COST PER UNIT ₹.
Depreciation on Machine	x	
Depreciation of Factory Building	x	
Repairs to Machine, Building	x	
Fuel	x	
Electric Power.	x	
ADD:- Work in Progress (opening)	x	
Less:- Work in Progress (closing)	x	
Less:- Sale of Scrap.	x	
(B) WORKS COST		
Office on cost		
office Salary	x	
office Rent	x	
Depreciation of office Building, furniture	x	
Repairs to office Building, furniture	x	
office Lighting	x	
General Expenses	x	
	x	
(C) COST OF PRODUCTION		
ADD- opening Stock of finished Goods	x	
less:- closing Stock of finished Goods	x	
(D) COST OF GOODS SOLD		
Selling and Distribution expenses	x	
(E) COST OF SALES		
PROFIT (May be % on Total cost or Sales	x	
(F) SELLING PRICE		

Scanned with CamScanner

लागत पत्रक के मदों का विश्लेषण: —

(A) मूल लागत (Prime cost) :— समस्त प्रत्यक्ष व्ययों के योग को मूल लागत कहा जाता है उसमें मुख्य रूप से प्रत्यक्ष सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम एवं प्रत्यक्ष व्ययों को शामिल किया जाता है। इस लागत को ज्ञात करने का उद्देश्य उत्पादित वस्तु की कुल लागत को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लागतों में बांटना होता है।

(B) कारखाना लागत (WORKS COST) :— कोई व्यय जो मुख्यतः कारखाने अथवा उत्पादन गृह में उत्पादन कार्य के संचालन तथा उसके नियंत्रण आदि के लिये किए जाते हैं, को कारखाना उपरिव्यय कहा जाता है। जब इन रकमों को मूल लागत में जोड़ दिया जाता है, तब कारखाना लागत (Works cost) ज्ञात हो जाती है। इस लागत को ज्ञात करने का मुख्य उद्देश्य कारखाना लागत पर नियंत्रण करना व कारखाने की कार्यकुशलता को ज्ञात करना होता है।

(C) कार्यालय लागत (OFFICE COST) :— जब कारखाना लागत में कार्यालय एवं प्रशासन उपरिव्यय की रकम को जोड़ दिया जाता है तब प्राप्त लागत कार्यालय लागत होती है। इसे उत्पादन लागत भी कहा जाता है। कार्यालय एवं प्रशासन उपरिव्ययों में कार्यालय प्रबंध, प्रशासन, विधि एवं अन्य व्यवस्था के लिए किये गये रकमों को शामिल किया जाता है। इस लागत को ज्ञात करने से भविष्य में कार्यालय को उन्नत करने के लिए योजना बनायी जा सकती है।

(D) कुल लागत (TOTAL COST) :— कार्यालय लागत में विक्रय व वितरण उपरिव्यय को जोड़ दिया जाता है तो कुल लागत प्राप्त हो जाता है। विक्रय व वितरण व्यय में उन रकमों को शामिल किया जाता है जो निर्मित

Scanned with CamScanner

माल को बेचने तथा बेचे हुए माल को ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए किये जाते हैं. जैसे— विक्रय प्रतिनिधियों का वेतन, कमीशन तथा यात्रा व्यय, प्रदर्शन व शोरूम के व्यय, विज्ञापन व्यय आदि. —

(E) **विक्रय मूल्य (SELLING PRICE) :—** कुल लागत में जब अनुमानित लाभ की राशि जोड़ दी जाती है, तो जो राशि आती है, उसे विक्रय मूल्य कहा जाता है. अनुमानित लाभ की गणना निम्न प्रकार से की जाती है:—

(१) जब लाभ का प्रतिशत लागत मूल्य पर दिया हो तब—

$$\text{Profit} = \text{Total cost} \times \frac{\%\text{ of Profit}}{100}$$

(२) जब लाभ का प्रतिशत विक्रय मूल्य पर आधारित हो तब. ऐसी स्थिति में चूँकि कुल लागत ज्ञात रहती है अतः लाभ की गणना निम्न प्रकार से किया जाता है:—

$$\text{Profit} = \text{Total cost} \times \frac{\%\text{ of Profit}}{100 - \%\text{ of Profit}}$$

Scanned with CamScanner